सरी दुनियां में भक्ति है। भक्ति को दुर्गति कोई समझते नहीं हैं। अगर अपने को पतित समझते हैं तो जरूर वो दुर्गति में हैं ना। बच्चों को ही अब पता पड़ा है कि ज्ञान क्या है। भक्ति से अब तुम ज्ञान में ट्रांसफर हो रहे हो। फिर ज्ञान की प्रारब्ध पूरी हो जावेगी तो फिर भक्ति में चले जावेंगे। पुरानी दुनियां से वैराग होगा। बाप कहते हैं कि बाकी थोड़े रोज हैं। तुम बच्चे तो आधा कल्प के रोगी हो। अब जानते हो कि हम अगर बन जावेंगे, बहुत धनवान बन जावेंगे। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी ही यह है। इस समय संगम पर तुम भविष्य जन्म लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। यह एक संगमयुग है। सत और त्रेता के संगम का गायन नहीं है। उनके बीच में मुदा (समय)ही है। कलियुग के संगम में मुदा है पुरुषोत्तम बनने का। तुम बच्चे जानते हो कि यही संगमयुग है जिसमें ही परमपिता आते हैं। वो तो समझते हैं कि युगे2 भगवान अवतार लेते हैं। बहुत सारे अवतार बैठ बनाते दिखाते हैं। वो तो सब फाल्तू कहानियां ही हैं भक्तिमार्ग की। अभी तुम ज्ञान मार्ग में हो। तुमको तो पास्ट का भी पता पड़ा है ना। तुम कहलाये जावेंगे ना कि भक्त। बाप भी है ज्ञान सागर तो तुम बच्चों को भी ज्ञान ही सुनाते हैं। वहां पर है भक्ति। वो तो शास्त्रों को भी ज्ञान ही समझ लेते हैं। भक्ति को ज्ञान की फिलासफी कह देते हैं। यह है ही रुहानी ज्ञान। यहां पर बाप ही बच्चे–बच्ची कह सकते हैं। कहते हैं कि हे मेरे बच्चों मैं तुमको सदगति देने आया हुआ हूँ। कहते है कि तुमको शांतिधम–सुखधाम का रास्ता बताने आया हूँ। बाप बच्चों को बहुत प्यार से समझाते हैं कि तुम पुकारते थे ना कि आकर हमारे दुःख हरो और सुख दो। अभी तुम बच्चे संगम पर हो। कलियुग में जो हैं वो पुकारते हैं। तुम तो अभी मंदिर आदि तीर्थों पर नहीं जाते हो ना। तुम्हारी बुद्धि में तो अब एम ऑब्जेक्ट सामने क्लीयर है। वो तो सिर्फ यात्राओं पर जाकर दर्शन (करके) आते हैं। विकार आदि और अशुद्ध खान–पान आदि से बचते हैं। आजकल तो शराब आदि भी छुपा कर ले जाते हैं। यह है याद की यात्रा। बाप कहते हैं कि याद से तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। तुम सतोप्रधान थे तो विश्व का मालिक थे। अभी तो तुमको अपना घर भी नहीं है और फिर विश्व का मालिक बनने पुरुषार्थ कर रहे हो। कल्प पहले जिन्होंने वर्सा लिया है वो ही अब भी लेंगे। सब नहीं ले सकेंगे। भक्तिमार्ग में तो बहुत ढेर जाकर इकट्ठे होते हैं। मनुष्य नहीं जानते हैं कि देवताओं को यह राज्य कैसे मिला। वो है डबल सिरताजधारी। तुम बच्चे रचता और रचना की आदि मध्य अंत को जानते हो। सूक्ष्मवतन की तो बात ही नहीं है। ब्राह्मण तुम अभी हो। देवतायें सतयुग में आवेंगे। शूद्र हैं कलियुग में। तुम ब्राह्मण संगमयुग में। फिर तुम ब्राह्मण से सतयुग में देवता बनेंगे। (मनुष्यों) को तो है भक्ति का नशा। यहा पर है ज्ञान का नशा। वो लोग अपने को शास्त्रों की अथॉरिटी समझते हैं। अभी तुम कितने सयाने–समझू बनते हो। नालेज से डॉक्टर लोग कितने होशियार हो जाते हैं। रग2 को वो लोग जानते हैं। बड़े2 आपरेशन करते हैं। तुम्हारा भी आपरेशन हो रहा है। तुम्हारे अनेक प्रकार के रोग हैं। वहां सतयुग में तो कोई भी बीमारी आदि होती नहीं है। तो ही जज ना ही बैरिस्टर आदि होते हैं। वो तो है ही सुखधाम। दुनियां में कितने भभके हैं। कितने फालोवर्स हैं। यह है तो सभी भक्ति की ही बातें ना। गृहस्थ व्यवहार में पवित्र तो रह नहीं सकते हैं। तुम बच्चों को युक्ति है। ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण ब्राह्मणियां हो। कमल फूल समान पवित्र रह सकते हो। कमल फूल जैसा गृहस्थी फूल और कोई नहीं होता है। उनमें बहुत फल आदि होते हैं पानी में भी रहते हैं। पानी में भी रहते है ;परंतु पानी टच नहीं करना है। भक्तिमार्ग में शो बहुत है। इसमें तो कुछ भी नहीं है। सिर्फ मुख्य है ही याद की बात। तुम नेष्ठा और योग अक्षर को उड़ा ही दो। हम बाबा की याद में बैठते हैं। पूछते हैं ना कि .....ओम।